भारत सरकार
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय
वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग
राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 606
(उत्तर देने की तारीख 04.12.2025)

सुगंध एवं पुष्पकृषि मिशन

606 # श्री बंशीलाल गुर्जर:

क्या ***विज्ञान और प्रौद्योगिकी*** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) सीएसआईआर के सुगंध एवं पुष्पकृषि मिशनों की वर्तमान स्थिति क्या है;
(ख) ये मिशन किसानों की आय बढ़ाने में किस हद तक सहायक रहे हैं;
(ग) क्या इन मिशनों का भारतीय आयात/निर्यात बाजार पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है और यदि हॉ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और
(घ) क्या सरकार पुष्पकृषि के माध्यम से किसानों को सशक्त बनाने के लिए फूलों की नई किस्में विकसित कर रही है और यदि हां, ऐसी कितनी किस्में विकसित की जा रही हैं ?

उत्तर

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय

(डॉ. जितेन्द्र सिंह)

क) सीएसआईआर ने भारत में पुष्प एवं सुगंध क्षेत्र को सहयोग प्रदान करने के लिए दो विशेष कार्यक्रम विकसित किए हैं। सीएसआईआर पुष्पकृषि मिशन को किसानों की आय बढ़ाने, उद्यमिता विकसित करने और भारत के पुष्पकृषि क्षेत्र को सशक्त करने के उद्देश्य से आरम्भ किया गया था। वर्तमान में, यह मिशन द्वितीय चरण में है, जिससे पुष्पकृषि से सम्बन्धित फसलों की खेती से 32,44,000 श्रम-दिवस सृजित हुए हैं। इस मिशन ने 2,208.63 हेक्टेयर क्षेत्र को पुष्प कृषि के अंतर्गत शामिल किया है, जिससे देश के 26 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 126 जिलों के 399 समूहों में 16,220 लोगों को सीधे लाभ हुआ है और इसका महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक प्रभाव पड़ा है। इसके अतिरिक्त, 17 प्रौद्योगिकियां विकसित की गई हैं और उद्यमियों व उद्योगों को हस्तांतरित की गई हैं। 5,728 लाभार्थियों, जिनमें 1,615 महिलाएँ शामिल हैं, के लिए 144 क्षमता-निर्माण व प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए हैं। इसके अतिरिक्त, इस मिशन ने मधुमक्खी पालन (एपिकल्चर) को अपनाया है और 1,072 हनी बी बॉक्स बांटे गए हैं, जिससे मधुमक्खी पालन (एपिकल्चर) को पुष्पकृषि के साथ एकीकृत करके 175 किसानों को लाभान्वित किया गया है।

सीएसआईआर का एक और विशेष कार्यक्रम जो वर्ष 2017 में पुष्पकृषि मिशन से पहले शुरू हुआ था, वह है सीएसआईआर सुगंध (अरोमा) मिशन। इस मिशन का उद्देश्य सुगंधित फसलों की खेती, संसाधन और मूल्य वर्धन के माध्यम से गांवों को सशक्त बनाना है। इस पहल ने अधिक आय सृजित करके किसानों को अधिक लाभ पहुँचाया है और उच्च गुणवत्ता वाले कच्चे माल से सुगंध उद्योग को सहायता प्राप्त हुई है तथा आत्मनिर्भरता में सहयोग मिला है। 51,000 हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र को सुगंधित फसलों के अंतर्गत शामिल किया गया है। 28 राज्यों में 4,500 से अधिक

सुगंध समूह (अरोमा क्लस्टर) बनाए गए हैं, जिनमें देश के आदिवासी क्षेत्रों के 20 समूह शामिल हैं। अब तक, सुगंधित फसलों की 52 किस्में और 82 क्षेत्र-विशिष्ट कृषि प्रौद्योगिकियाँ विकसित की गई हैं। सुगंधित फसलों के संसाधन हेतु, अलग-अलग राज्यों में 408 उन्नत आसवन इकाइयाँ स्थापित की गई हैं। कौशल विकास के अंतर्गत, 2,096 प्रशिक्षण एवं जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं, जिनमें 10,000 महिलाओं सहित 1.22 लाख लोगों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। इसके अतिरिक्त, सुगंधित फसलों से मूल्य-वर्धित उत्पाद बनाने के सम्बन्ध में 110 से अधिक उद्यमियों को सहायता प्रदान की गई है। ग्रामीण क्षेत्रों में करीब 1 करोड़ रोज़गार सृजित हुए हैं। सुगंध (अरोमा) मिशन के अंतर्गत 600 करोड़ रुपये मूल्य का 6,000 टन से अधिक सगंधीय तेल निकाला गया है, जो सुगंध सम्बन्धी उद्योग (अरोमा इंडस्ट्री) के लिए कच्चे माल के तौर पर उपयोग में लाया गया है।

ख) सीएसआईआर पुष्पकृषि मिशन, पुष्पकृषि और मधुमक्खी पालन (एपिकल्चर) से कुल मिलाकर ₹262 करोड़ से अधिक की आय सृजित करके देश भर के 22,137 किसानों को लाभान्वित करते हुए किसानों की आय बढ़ाने में बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुआ है। औसतन, इसमें भाग लेने वाले प्रत्येक किसान को लगभग ₹1.18 लाख का लाभ हुआ है, जो पारंपरिक फसल प्रणाली की तुलना में आय में लगभग 2–3 गुना बढ़ोतरी को दर्शाता है। इस मिशन ने 44 लाख से अधिक श्रम-दिवस के ग्रामीण रोज़गार भी सृजित किए हैं, जिससे जीवीका सुरक्षा और अधिक सशक्त हुई है।

सीएसआईआर सुगंध मिशन (अरोमा मिशन) के अंतर्गत, लेमनग्रास, पामारोसा, वेटिवर (खस), तुलसी, मेंथा जैसी सुगंधित फसलों की खेती भी प्रारम्भ की गई है, जिन्हें न्यूनतम पानी और पोषक तत्वों की आवश्यकता के साथ आसानी से उगाया जा सकता है। इन फसलों को वर्षा सिंचित परिस्थितियों में आसानी से उगाया जा सकता है, जिससे किसानों को अपनी ज़मीन पर इन्हें उपजाने और पारंपरिक फसलों की तुलना में मृदा की आरोग्यता एवं आय को रु. 60,000/- से रु. 70,000/- प्रति हेक्टेयर तक बढ़ाने का बेहतर विकल्प प्राप्त होता है। वेटिवर जैसी फसलें साइक्लोन, सुनामी और बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में शुरू की गईं, जो अब किसानों के लिए लाभप्रद हैं।

ग) सीएसआईआर पुष्पकृषि मिशन ने फूलों के आयात में लगभग 15 प्रतिशत की कमी के प्रारम्भिक लक्ष्य के साथ फूलों के भारतीय आयात-निर्यात पर अत्यधिक प्रभाव डाला है। साथ ही, सीएसआईआर सुगंध (अरोमा) मिशन ने देश को लेमनग्रास सगंधीय तेल का सबसे बड़ा उत्पादक और निर्यातक बनने में सहायता प्रदान की है। उच्च उपज वाली किस्मों के सम्बन्ध में सीएसआईआर के सतत प्रयासों ने भारत को मेंथॉल मिंट के उत्पादन में वैश्विक रूप से अग्रणी बना दिया है। पामारोसा तेल भी भारत से अन्य कई देशों में निर्यात किया जाता है। सुगंध (अरोमा) मिशन के कारण, उत्तर प्रदेश, बिहार और तमिलनाडु में वेटिवर फसलों की खेती बढ़ी है, जिससे दूसरे देशों से वेटिवर तेल के आयात का बोझ कम हुआ है।

घ) सीएसआईआर पुष्पकृषि मिशन घरेलू पुष्पकृषि को सशक्त करने और किसानों की आय को बढ़ाने के लिए फूलों की नई किस्मों को विकसित कर रहा है। इस मिशन के अंतर्गत, आठ किस्में प्रस्तुत की गई हैं, जिनमें सीएसआईआर-एनबीआरआई, लखनऊ द्वारा विकसित कमल की किस्म एनबीआरआई-नमोह 108 और गुलदाउदी की चार किस्में ('एनबीआरआई-जगन्नाथ', 'एनबीआरआई-सरस्वती', 'एनबीआरआई-स्तुति', और 'एनबीआरआई-पदम') शामिल हैं। सीएसआईआर-आईएचबीटी, पालमपुर ने जरबेरा की तीन किस्मों ('हिम अरुणा-मरून', 'हिम प्रभा-येलो' और 'हिम कुमुद-पिंक') को विकसित किया है। एनबीआरआई-नमोह 108 की कृषि-प्रौद्योगिकी को बड़े पैमाने पर पैदावार हेतु कई राज्यों के उद्यमियों को पहले ही हस्तांतरित किया जा चुका है। ग्लेडियोलस, जरबेरा, गुलदाउदी और कमल की और अधिक किस्मों को विकसित किए जाने के सम्बन्ध में अनुसंधान जारी है।

****